कक्षा के बाहर सीखना : असल जीवन के अनुभव

जिनेविव तलंग

बच्चे बुद्धिमान, होशियार और जिज्ञासु होते हैं, और बड़ी तेज़ी से कुछ भी सीख सकते हैं। अपनी किताबों से सीखने और ज्ञान हासिल करने के अलावा, कक्षा के बाहर सीखना भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना कि किसी निर्धारित पाठ्यक्रम से। हम जानते ही हैं कि कक्षा के बाहर से सीखने का मतलब है अपने आस-पास के माहौल से सीखना, यानी असल जीवन के अनुभवों से। बच्चे अपने इर्द-गिर्द की चीज़ों से बहुत कुछ सीख सकते हैं, फिर भले ही वह घर के पिछवाड़े में फैला हुआ कीचड़ हो या नदी में बहता हुआ पानी। किसी शिक्षक से यह उम्मीद करना कि वह कक्षा के भीतर ही बच्चों को सब कुछ सिखा दे, बिलकुल भी व्यावहारिक बात नहीं है, इसलिए यह महत्त्वपूर्ण है कि हम न सिर्फ़ अपने बच्चों को प्रकृति से सीखने की छूट दें बल्कि उसमें उनकी मदद भी करें।

दूसरी कक्षा में पढ़ने वाला, एक सात साल का बच्चा, पर्यावरण अध्ययन की अपनी पाठ्यपुस्तक से पानी के विभिन्न स्रोतों के बारे में सीख ही लेगा, लेकिन कभी-कभी बच्चों को किसी अवधारणा का महत्त्व और उसके बारे में जानने की ज़रूरत को समझाने के लिए, हमें सीखने-सिखाने के कुछ आसान-से तरीक़ों और विधियों को ढूँढ़ना पड़ता है। बच्चे प्रकृति के बारे में खोजबीन कर सकें, इसका एक तरीक़ा तो यह है कि उन्हें किसी बहती हुई नदी या समुद्र किनारे ले जाएँ जहाँ वे पानी के स्रोतों, पौधों, पत्थरों और मिट्टी का अवलोकन कर सकें। इस तरह से बच्चे और भी बहुत सारी महत्त्वपूर्ण बातें सीखेंगे : जैसे पानी को साफ़ कैसे रखना है, क्योंकि वह यहाँ पर सीखते हैं कि उसे गन्दा नहीं करना है और कैसे उसकी स्वच्छता को बचाए रखना है ताकि वह उसे पी सकें। यह किसी भी विषय

के महत्त्व को सिखाने का सबसे सरल और आसान तरीक़ा है। यह सारे अनुभव बच्चों के मन में देर तक बने रहेंगे उन बच्चों की तुलना में जिन्हें कभी ऐसी खोजबीन का मौक़ा ही नहीं मिला या जिनके पास ऐसा कोई प्रत्यक्ष अनुभव नहीं है। यहाँ वे सिर्फ़ उस विषय के बारे में ही नहीं सीखते, बल्कि उन्हें शारीरिक गतिविधियों का भी मौक़ा मिलता है जो ग्रॉस एवं फाइन मोटर स्किल्स (Gross & Fine Motor Skills) के विकास के लिए बहुत ज़रूरी हैं।

मोटर स्किल्स के विकास को समझने के लिए हम तैराकी की मिसाल ले सकते हैं। हम सभी चाहते हैं कि बच्चे पानी में किसी तरह की दुर्घटना के शिकार न हों, इसलिए हम अपने विद्यार्थियों को घर पर और बाहर सुरक्षा का ध्यान रखने के बारे में समझाते रहते हैं, साथ ही किसी आकस्मिक दुर्घटना से निपटने के अभ्यास और जागरूकता से जुड़े कई तरह के प्रोग्राम हमारे स्कूलों में चलते रहते हैं। विज़ुअल या दृश्य माध्यमों के ज़रिए सिखाए जाने वाले आपदा से बचाव के अभ्यासों पर विचार करिए, क्या सिर्फ़ समझा देने से या पीपीटी देख लेने भर से बच्चा उन्हें कर पाने में सक्षम हो जाता है? यह एकदम असम्भव है, इसलिए बच्चे को बाहर नदी तक लेकर जाना और खोजबीन में उसकी मदद करना उससे कहीं बेहतर है, क्योंकि वहाँ वह तेज़ी से सीखेगा और उसे मज़ा भी आएगा।

उच्च कक्षाओं में विज्ञान सीखना और भी ज़्यादा मुश्किल हो जाता है, क्योंकि अवधारणाओं को समझने के लिए कहीं अधिक ध्यान केन्द्रित करने की ज़रूरत पड़ती है, कुछ बच्चों

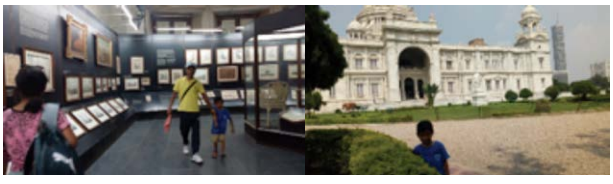

को तो ख़ासतौर पर। मुझे अपने बारे में याद है कि कैसे प्रयोगों और असल जीवन के अनुभवों के बिना विज्ञान को पढ़ने और समझने में ढेरों समस्याओं का सामना करना पड़ा। कुछ विषयों को तो कक्षा के बाहर कहीं ज़्यादा बेहतर तरीक़े से सीखा जा सकता है, छोटी-छोटी यात्राओं के ज़रिए, संग्रहालयों और वैज्ञानिक संस्थाओं से, कारखानों और प्रदर्शनियों से, खेतीबाड़ी करते हुए, तरह-तरह के प्रोजेक्ट और प्रयोगों से। एक बात जो मेरी नज़र में बहुत महत्त्वपूर्ण है वह है बच्चों की मदद के मामले में अभिभावकों को शामिल करना।

अपने बच्चों के अध्यापकों से मुझे जो सबसे ज़बरदस्त अनुभव मिला वह यह कि उन्होंने हमें याद दिलाया कि बच्चे की सीखने की प्रक्रिया में माता-पिता को शामिल करना कितना महत्त्वपूर्ण है। बच्चे और माता-पिता दोनों साथ-साथ ही सीखते हैं क्योंकि इससे भावनात्मक, मानसिक और शारीरिक विकास जुड़ा हुआ है। जब बच्चे और माता-पिता मिलकर काम करेंगे तो बच्चा समूह में काम करना सीखेगा, और उसके सामाजिक व्यवहार में सुधार और निखार आएगा,

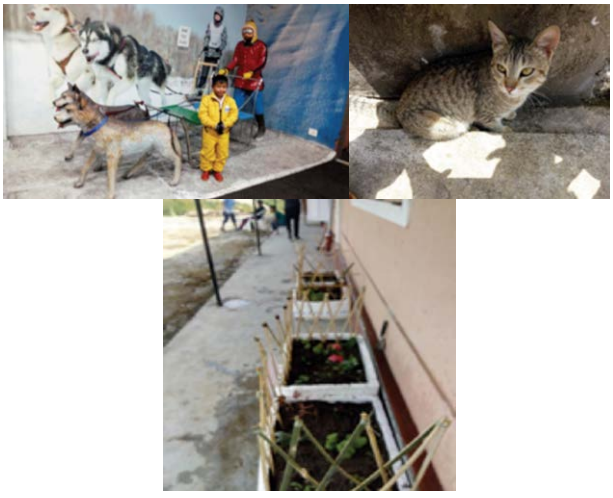

वह सीखेगा कि नई परिस्थितियों में आसानी से कैसे ढलना है। साथ ही वह दूसरों के साथ सहयोग, प्रेम और भरोसा करना सीखेगा। मारिया मोंटेसरी के मुताबिक जब बच्चे और माता-पिता मिलकर काम करते हैं तो बच्चे की प्रेम और देखभाल की ज़रूरत पूरी हो जाती है और इसे पूरा करने का एक तरीक़ा कक्षा के बाहर सीखना भी है। बच्चे को उसमें जो मज़ा आता है उससे उसे बड़ी तसल्ली मिलती है, भले ही वह काम सिर्फ़ फ़ोटो या तस्वीरें चिपकाने का हो या फिर आर्ट एंड क्राफ्ट सम्बन्धी गतिविधियाँ हों।

नेशनल कौंसिल ऑफ टीचर एजुकेशन (एनसीटीई) शिक्षकों के मानवीय होने की बात पर बहुत ज़ोर देती है। लेकिन वृहद पाठ्यक्रम और काम की व्यस्तता की वजह से कई बार शिक्षकों को इस पहलू को नज़रअन्दाज़ करना पड़ता है। कोर्स पूरा करने के लिए सभी शिक्षकों को तेज़ी से पढ़ाना पड़ता है। तो फिर कक्षा के बाहर भी बच्चों को सीखने में मदद करने का समय कहाँ से मिलेगा, जबकि पाठ्यक्रम और पाठ्यचर्या ने तो पहले ही उसे साल भर के लिए कक्षा के भीतर उलझा रखा है? इसलिए पाठ्यक्रम को इस तरह से तैयार किए जाने की ज़रूरत है जिसमें बच्चों को महीने में कम-से-कम एक बार हर टॉपिक या विषय में कक्षा से बाहर जाकर सीखने का मौक़ा मिले।

कक्षा से बाहर सीखने की बात सिर्फ़ छोटे बच्चों के लिए ही नहीं है, बल्कि यह उच्च कक्षाओं और यहाँ तक कि कॉलेज के विद्यार्थियों के लिए भी उतनी ही सही है। इससे छोटे बच्चों

को बढ़ने और विकसित होने में तो मदद मिलती ही है लेकिन बड़ी उम्र के विद्यार्थियों को इससे जो बल मिलता है उससे भी इनकार नहीं किया जा सकता। मिसाल के लिए, जब हम बड़ी कक्षा के विद्यार्थियों को कोई असाइनमेंट देते हैं तो इस बात का ख़्याल रखना बेहद महत्त्वपूर्ण है कि वे अपनी बात को तथ्यों के आधार पर लिखें और मौलिक रूप से उस पर सोच-विचार करें। अक्सर हम देखते हैं कि विद्यार्थी उन्हें किसी किताब या फिर किसी दूसरे की कॉपी से बस ज्यों-का-त्यों उतार लाते हैं। ऐसी चीज़ें शायद इसलिए होती हैं क्योंकि एक शिक्षक के नाते हम विद्यार्थियों को यह नहीं बताते कि वे अपने ख़ुद के अनुभवों के बारे में लिखें। हालाँकि यह काम थोड़ा मुश्किल है, लेकिन जो हम कर सकते हैं वह यही है कि उन्हें फील्ड-ट्रिप्स पर ले जाएँ, भेंट-वार्ताएँ करवाएँ, तरह-तरह के प्रयोग करवाएँ और सेमिनार और कॉन्फ्रेन्स में ले जाएँ।

मिसाल के लिए जब हम बच्चों को संविधान पर कोई असाइनमेंट देते हैं तो नतीजा यही होता कि ज़्यादातर विद्यार्थी किताबों से उतारकर ले आते हैं। लेकिन अगर कोई शिक्षक कक्षा के बाहर के अनुभवों के ज़रिए उन्हें इसके बारे में समझने में उनकी मदद करे, जैसे कि किसी अदालत में या संसद में ले जाकर, विधायकों, अधिकारियों के साथ भेंट-वार्ता करवाकर, चुनाव के दौरान लगने वाली डयूटी में उन्हें शामिल करके जहाँ पर वे बुज़ुर्गों या विशेष आवश्यकता वाले लोगों की मदद कर सकते हैं, या पोस्टर वगैरह चिपकाने में भी उनकी मदद ली जा सकती है, तो फिर उनके पास लिखने के लिए अपने कुछ मौलिक अनुभव होंगे। पंचायत या स्थानीय समुदाय से जुड़े हुए कामों में उन्हें शामिल करना, राष्ट्रीय दिवसों के बारे में बातचीत करना और कैसे यह सब हमारे संविधान से जुड़ा हुआ है इस पर चर्चा कर हम उनकी मदद कर सकते हैं। व्यावहारिक शिक्षा, कक्षा में दिए जाने वाले लेक्चरों से कहीं बेहतर है, जिन्हें याद रखना ज़्यादा मुश्किल होता है।

इसकी एक और मिसाल है समावेशी शिक्षा, विकलांगता और विशेष शिक्षा का क्षेत्र। सेवा-पूर्व प्रशिक्षुओं को जब प्रशिक्षण पर भेजा जाता है, जिनमें सभी वयस्क होते हैं, कुछ महत्त्वपूर्ण मामलों के बारे में उन्हें कोई जानकारी ही नहीं होती क्योंकि उनके पास कोई व्यावहारिक अनुभव नहीं होता। तो सीखने में उनकी मदद इन्हीं तरीक़ों से की जा सकती है कि आप उन्हें कक्षा से बाहर ले जाएँ, अलग-अलग तरह के विशेष और समावेशी स्कूलों और संस्थाओं का भ्रमण कराएँ, और विशेष आवश्यकता वाले बच्चों से मिलवाएँ। इस तरह कक्षा के बाहर सीखना वयस्क शिक्षार्थियों के लिए और यहाँ तक कि शिक्षक-प्रशिक्षकों के लिए भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि कुछ भी पढ़ाने से पहले हमें उसका सहज अनुभव होना चाहिए, ज़ाहिर है कि इससे सीखने और सिखाने में मज़ा भी आने लगेगा।

जो कुछ भी मैंने लिखा है वह सब मेरे अपने अनुभवों पर आधारित है : पहले एक विद्यार्थी के तौर पर, फिर एक माँ के रूप में, फिर एक शिक्षिका और अब एक शिक्षक-प्रशिक्षक के तौर पर मेरे अनुभव। कोई भी दो बच्चे, भले ही वे जुड़वाँ क्यों न हों, एक जैसे नहीं होते। सीखने का सबका अपना-अपना तरीक़ा होता है, लेकिन एक चीज़ जो समान है वह यह कि हम सब एक ही वातावरण में रहते हैं, उसी हवा में साँस लेते हैं, यही वजह है कि हम सब कक्षा के बाहर कुदरती माहौल में ज़्यादा बेहतर तरीक़े से सीख पाते हैं। किसी कार्य को करते हुए सीखना, कुछ देखकर सीखना और वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में रहते हुए सीखना ही सबसे बेहतरीन होता है क्योंकि इससे बच्चे को ख़ुशी मिलती है और उसका विकास होता है।

जिनेविव तलंग ने शिक्षा में मास्टर डिग्री हासिल की है, साथ ही स्पेशल एजुकेशन में बीएड हैं। वे डायट (DIET), सोहरा, मेघालय में प्रवक्ता के पद पर कार्यरत हैं। उनसे *genevievedtalang0921@gmail.com* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : बलराम बोधि **पुनरीक्षण** तथा **कॉपी एडीटिंग :** स्वाति भदौरिया